



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 34-36

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

वसीउर रहमान खॉ

UGC. Net, Hindi Sahitya,
Assistant Professor,
Mohammad Ali Jauhar University
Rampur. U.P.

Correspondence:

वसीउर रहमान खॉ

UGC. Net, Hindi Sahitya,
Assistant Professor,
Mohammad Ali Jauhar University
Rampur. U.P.

"हिन्दी भाषा तथा साहित्य में खड़ीबोली का क्रमिक विकास"

वसीउर रहमान खॉ

शोध सार:

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में गद्य विद्या का विकास खड़ीबोली के द्वारा ही प्रशस्त हुआ। अमीर खुसरो को इसका प्रथम कवि माना जाता है, जिन्होंने अपनी पहेलियाँ तथा मुकरियों की रचना खड़ीबोली में की। फोर्ट विलियम कॉलेज के चार लेखको ने खड़ीबोली की अनेक शैलियों की नींव रखी, पर यह शैलियाँ कुछ लेखको की विलास मात्र बनी रही खड़ीबोली के परिनिष्ठित रूप का विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ। अनेक विचारकों जैसे महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसे मानक रूप दिया, जिसके कारण यह बोली तक सीमित न रहकर भाषा के रूप में विकसित हुई। उन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से गद्य तथा पद्य की विभाजन रेखा को मिटा दिया, जिसके बाद गद्य-पद्य की भाषा खड़ीबोली हो गई। आज यह अनेक क्षेत्रों का माध्यम बन चुकी है। आज हिन्दी साहित्य से आशय खड़ीबोली में लिखा जाने वाला साहित्य है। वर्तमान समय में यह न केवल भारत के कोने-कोने में बहुतायत से बोली जा रही है, अपितु हमारे देश को विश्व से अनेक क्षेत्रों से जोड़ने का कार्य कर रही है।

बीज शब्द: खड़ीबोली, भाषा, अमीर खुसरो, ब्रजभाषा, साहित्य, परिनिष्ठित, एकरूपता।

मुख्य शोध:

हिन्दी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली के विकास पर अंतर्दृष्टि डालना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी से आधुनिक हिन्दी गद्य और पद्य का जन्म हुआ। अमीर खुसरो ने इसकी नींव रखी तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी और भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने इसे मानक रूप दिया। खड़ी बोली ने ही निबंध, कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी गद्य विधाओं के विकास का मार्ग प्रशस्त किया और बाद में हरिऔध जी ने इसे महाकाव्य की भाषा के रूप में स्थापित किया। यह अब भारत की एक सशक्त, जीवित और राष्ट्रव्यापी भाषा बन गई है, जो साहित्य के साथ-साथ देश की आम जनता की भाषा है। इसने कई अन्य देशी तथा विदेशी शब्दों को भी अपनाया है और समृद्ध किया है, जिससे इसकी अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ गई है।

"खुसरो खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते हैं, यद्यपि खड़ी बोली का प्रभाव अपभ्रंश की कविताओं पर भी है, पर जैसा कि प्रचलित विश्वास है कि खुसरो ने खड़ी बोली में प्रभूत रचनाएं कीं किंतु उनमें से अधिकांश नष्ट हो गईं। जो रचनाएं उनके नाम पर उद्धृत की जाती हैं, वे सर्वथा संदिग्ध हैं, लेकिन भारत की जमीन को इतना प्यार करने वाले संवेदनशील कवि ने जनता की बोली को अवश्य अपनाया होगा।"¹

खड़ीबोली को आज के समय में उपभाषा या बोली कहना असंगत है। 12वीं और 13वीं शताब्दी में यह सीमित बोली थी। उस समय इसका नाम कौरवी था। आज यह बोली विकसित होकर भाषा बन गई, परन्तु इसका नाम आज तक खड़ीबोली ही रूढ़ प्रसिद्ध है। कहना न होगा इसका पर्याय वह हिन्दी है, जो न केवल राष्ट्रभाषा अपितु राजभाषा भी है। आज व्याकरण एवं साहित्य की दृष्टि से खड़ीबोली पर्याप्त समृद्ध है।

बहुत कम समय में इसने बोली से बढ़कर भाषा का रूप निर्मित किया है। उससे भी बढ़कर मानक भाषा में तब्दील हुई है। समूचे ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, प्रशासन, व्यवसाय, प्रौद्योगिकी, काव्य आदि का माध्यम बनने में सक्षम हुई। आज समस्त हिंदी-भाषियों और भारत के अधिकतर क्षेत्रों का बहुतायत कार्य इसी खड़ी बोली में हो रहा है। भारत वर्ष के अतिरिक्त दूसरे देशों में यह शिक्षा, साहित्य और व्यावहारिक क्रिया-कलाप का सेतु बन रही है।²

देश के विभिन्न भागों में मुसलमानों के फैलने तथा दिल्ली के दरबारी शिष्टता के प्रचार के कारण खड़ीबोली व्यवहार की भाषा बन गई। खुसरो ने ब्रजभाषा के साथ साथ खड़ी बोली में भी पहेलियाँ तथा पद्य बनाए थे। "मुगल साम्राज्य के ध्वंस से भी खड़ी बोली के फैलने में सहायता पहुँची। दिल्ली, आगरा आदि पछाहीं शहरों की समृद्धि नष्ट हो चली थी और लखनऊ, पटना, मुर्शिदाबाद आदि नई राजधानियाँ चमक उठीं। जिस प्रकार उजड़ती हुई दिल्ली को छोड़कर मीर इंशा आदि उर्दू शायर पूरब की ओर आने लगे, उसी प्रकार दिल्ली के आसपास की हिंदू व्यापारी जातियाँ (आगरा वाले, खत्री आदि) जीविका के लिये लखनऊ, फैजाबाद, प्रयाग, काशी, पटना आदि पूर्वी शहरों में फैलने लगीं। उनके साथ-साथ उनकी बोलचाल की भाषा खड़ी बोली भी लगी चलती थी। यह सिद्ध बात है कि उपजाऊ और सुखी प्रदेशों के लोग व्यापार में उद्योगशील नहीं होते। अतः धीरे-धीरे पूरब के शहरों में भी इन पश्चिमी व्यापारियों की प्रधानता हो चली। इस प्रकार बड़े शहरों के बाजार की व्यावहारिक भाषा भी खड़ी बोली हुई। यह खड़ी बोली असली और स्वाभाविक थी, मौलवियों और मुंशियों की उर्दू-ए-मुअल्ला नहीं।"³ भक्तिकाल के आरम्भ में निर्गुण धारा के संत कवि कबीर ने खड़ीबोली का व्यवहार अपनी सधुक्की भाषा में किया। गंग कवि द्वारा 'चंद छंद वरनन की महिमा' एक गद्य पुस्तक खड़ीबोली में लिखी। "अकबर और जहाँगीर के समय से ही खड़ी बोली भिन्न-भिन्न प्रदेशों में शिष्ट समाज के व्यवहार की भाषा हो चली थी। यह भाषा उर्दू नहीं कही जा सकती, वह हिन्दी खड़ी बोली है। यद्यपि पहले से साहित्य भाषा के रूप में स्वीकृति न होने के कारण इसमें अधिक रचना नहीं पायी जाती, पर यह बात नहीं कि इसमें ग्रंथ लिखे ही नहीं जाते थे। दिल्ली राजधानी होने के कारण जब से शिष्ट समाज के बीच इसका व्यवहार बढ़ा, तभी से इधर-उधर कुछ पुस्तकें इस भाषा के गद्य में लिखी जाने लगीं। विक्रम संवत् 1798 में रामप्रसाद 'निरंजनी' ने "भाषा योगवासिष्ठ" नाम का ग्रंथ साफ सुथरी खड़ी बोली में लिखा।"⁴

मध्यकाल में 'खड़ीबोली' का मिश्रित रूप में प्रयोग होता था। परन्तु आधुनिक काल तक आते आते इसका केवल एक रूप ही प्रयोग होने लगा। "समूचे मध्य देश की काव्य भाषा का आधार हर युग में एक रहा है। कभी आरम्भ में वह खड़ीबोली तो कभी खड़ीबोली और

ब्रजभाषा का मिला जुला रूप। फिर मध्यकाल में ब्रजभाषा और अंशतः अवधि और अब आधुनिक काल में यह आधार फिर से खड़ीबोली हुआ है। कुमायूँ से सुमित्रानंदन पंत, बैसवाड़े से निराला, ब्रजक्षेत्र से महादेवी वर्मा और भोजपुरी क्षेत्र से प्रसाद आकर एक खड़ीबोली के आधार पर उस नये काव्य आन्दोलन को जन्म देते हैं जो आधुनिक कविता की विशिष्टतम उपलब्धि बनता है। छायावादी कविता इतने बोली क्षेत्रों के संस्कार अपने में समाहित किए हैं, जो घुल मिलकर एक काव्य भाषा में रचे गए हैं। हिंदी क्षेत्र की भाषिक एकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह समान काव्य भाषा का प्रयोग है।" आधुनिक काल में इस मध्य देश अथवा हिंदी प्रदेश की पहचान बनाने में धीरेन्द्र वर्मा, राहुल सांकृत्यायन तथा वासुदेवशरण अग्रवाल प्रमुख हैं। राजनीतिक क्षेत्र के विचारकों में राम मनोहर लोहिया का ध्यान इस ओर गया। उर्दू जो बोलचाल में खड़ी बोली का ही एक रूप है। हिंदी काव्य भाषा से अलग हो जाती है। यहाँ स्मरणीय है कि यह अलगाव साम्प्रदायिक धरातल पर कभी नहीं रहा। अलगाव का यदि कोई आधार रहा तो यह कि उर्दू दरबार से जुड़ी रही। यद्यपि बाज़ार से भी उसका संबंध बराबर बना रहा और हिंदी विविध बोलियों के रूप में जनसाधारण में प्रयुक्त होती रही और खत्री तथा अग्रवाल जैसी व्यापारिक जातियाँ अपने आवागमन के साथ हिंदी का प्रसार करती रहीं। एक ही खड़ीबोली के दो रूप यों अलग अलग ढंग से संस्कारित और प्रचारित हुए।"⁵

प्रारम्भ में हिंदी का प्रयोग फारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में होता था। "डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का मत है कि सत्रहवीं सदी तक हिंदी और हिंदवी शब्द समानार्थक थे और सामान्यतः मध्य देश की भाषा के लिए प्रयुक्त होते थे। उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी का नामकरण भारत के हिंदुओं ने नहीं, ईरान और अरब से आए और इस देश में बसे मुसलमानों ने किया था। लेकिन, मुसलमानों ने हिंदी प्रदेश में फैली विभिन्न बोलियों को न अपनाकर दिल्ली और मेरठ की बोली "खड़ीबोली" को अधिक प्रथम दिया। इसके विपरीत हिंदुओं ने ब्रजभाषा, अवधी तथा अन्य देशी भाषाओं में अधिक रचनाएं कीं। बाद में ये लोग भी मुसलमानों के मार्ग पर चले। इससे सिद्ध होता है कि देश के मुसलमानों ने जिस अर्थ में देशी भाषा (खड़ीबोली) को ग्रहण किया वह ही हिंदी की सही दिशा थी। आज हिंदी का अर्थ खड़ीबोली या उसमें लिखा जाने वाला साहित्य ही समझा जाता है। इस हिंदी को हमारे साधु-संतों ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में फैला दिया था। अतः यह धीरे-धीरे सारे देश में रस-बस गई।"⁶

"खड़ीबोली" के प्राबल्य, विस्तार और आदर्शिकरण के साथ इसका ब्रजभाषा के साथ मिश्रित रूप समाप्त हो गया। "साहित्य की भाषा तो ब्रजभाषा थी, किन्तु जनसाधारण के दैनंदिन कार्य की भाषा खड़ीबोली ही थी। नवागंतुक अंग्रेज़ भी व्यवहार की भाषा से परिचित होते थे, ब्रजभाषा से नहीं। अतः इन लोगों ने खड़ीबोली को ही प्रोत्साहित किया। इस सन्दर्भ में श्रीरामपुर मिशन और फोर्ट विलियम कॉलेज उल्लेखनीय हैं।"⁷

खड़ीबोली को परिनिष्ठित रूप में विकसित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का बहुत बड़ा योगदान है। “भाषा का आदर्शीकरण और स्थिरीकरण महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि भाषा की एकरूपता और परिनिष्ठिता के लिये खड़ीबोली की एकछत्र सत्ता को मानना पड़ेगा और आंचलिक उपभाषाओं को छोड़ना ही पड़ेगा। साहित्य में दो भाषाओं का होना इसकी अस्थिरता और अनेकरूपता का कारण है। इस धारणा के विरुद्ध ब्रजभाषा प्रेमियों ने एक वितण्डावाद खड़ा किया। हिन्दी साहित्य के सौभाग्य से खड़ीबोली का पक्ष सफल रहा।”⁸

निष्कर्ष:

आज खड़ीबोली एक बोली न रहकर भाषा के रूप में विकसित हो चुकी है। यह देश की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के रूप में उभरकर सामने आई है। मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक इसमें एकरूपता आई है, जिसके कारण इसका मानक रूप बन गया है। अनेक विचारकों ने ब्रजभाषा को न अपनाकर खड़ीबोली को प्रोत्साहित किया। अंततः यह देश की एक समृद्ध तथा सशक्त भाषा के रूप में विकसित हुई।

सन्दर्भ संकेत

1. सिंह, डॉ० बच्चन, 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास', दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 65.
2. डॉ० हरदेव बाहरी, “हिन्दी: शब्द अर्थ प्रयोग”, अभिव्यक्ति प्रकाशन, प्रयागराज: पृष्ठ 79.
3. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, “हिन्दी साहित्य का इतिहास”, नई दिल्ली: कमल प्रकाशन: पृष्ठ 279.
4. वही पृष्ठ 280.
5. चतुर्वेदी, डॉ० राम स्वरूप, “हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास” लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज: पृष्ठ.19.
6. प्रसाद, डॉ० वासुदेव नन्दन, “आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना”, भारती भवन, पटना: पृष्ठ 8 व पृष्ठ 9.
7. डॉ० हरदेव बाहरी, “हिन्दी: उद्भव विकास और रूप”, किताब महल, नई दिल्ली: प्रथम संस्करण, 1965, पृष्ठ 233.
8. वही पृष्ठ 234.